ग़ज़ल 08

- रविशंकर श्रीवास्तव

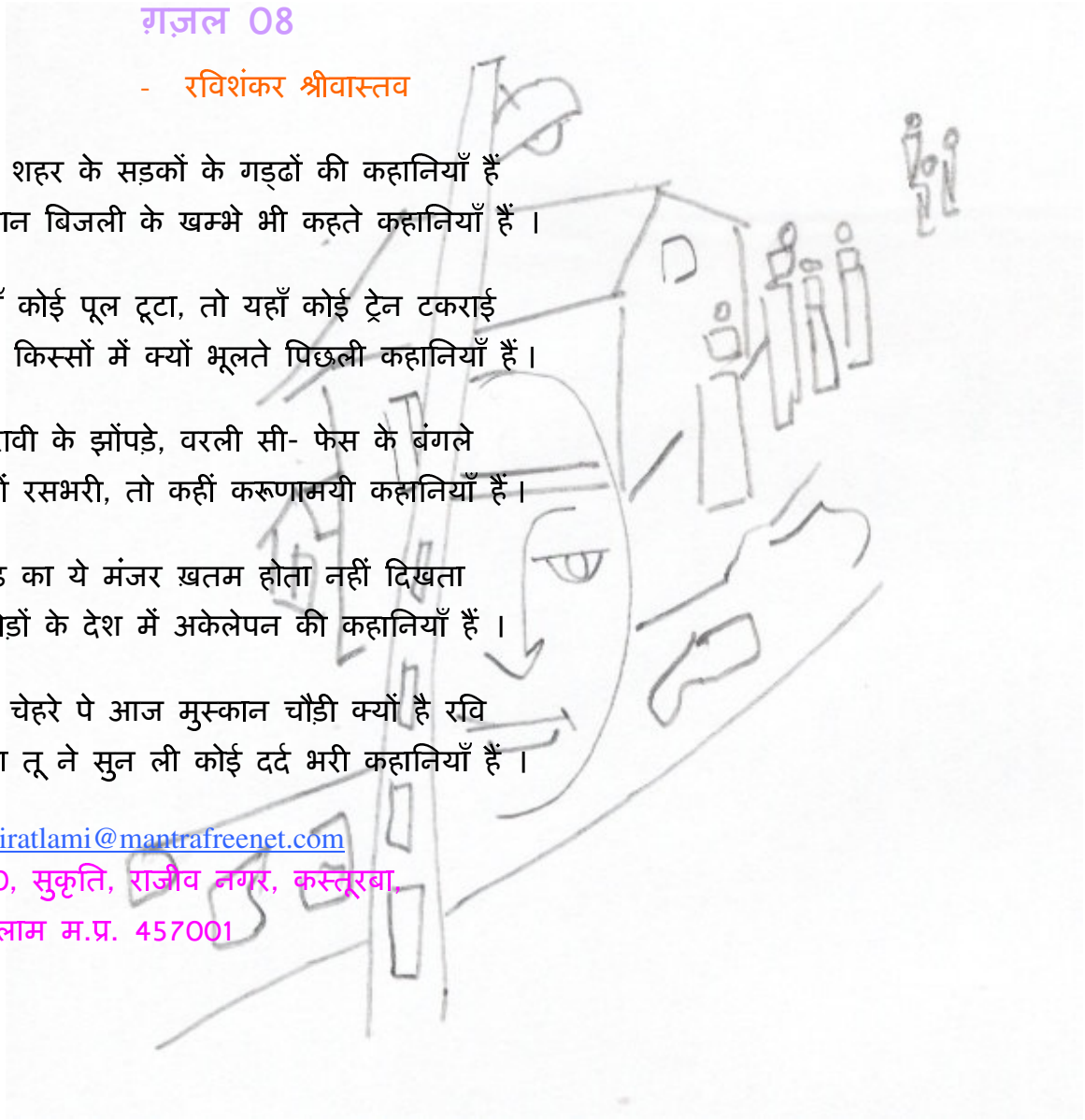

मेरे शहर के सड़कों के गड्ढों की कहानियाँ हैं
बेजान बिजली के खम्भे भी कहते कहानियाँ हैं ।

वहाँ कोई पूल टूटा, तो यहाँ कोई ट्रेन टकराई
नए किस्सों में क्यों भूलते पिछली कहानियाँ हैं ।

धारावी के झोंपड़े, वरली सी- फेस के बंगले
कहीं रसभरी, तो कहीं करूणामयी कहानियाँ हैं ।

भीड़ का ये मंजर ख़तम होता नहीं दिखता
करोड़ों के देश में अकेलेपन की कहानियाँ हैं ।

तेरे चेहरे पे आज मुस्कान चौड़ी क्यों है रवि
क्या तू ने सुन ली कोई दर्द भरी कहानियाँ हैं ।

raviratlami@mantrafreenet.com
100, सुकृति, राजीव नगर, कस्तूरबा,
रतलाम म.प्र. 457001